पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी (हाइब्रिड माध्यम)

26 सितम्बर 2022

जलवायु परिवर्तन नियंत्रण में वानिकी की भूमिका

Role of Forestry in Climate Change Mitigation

जलवायु परिवर्तन मनुष्यता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। वनों में जलवायु परिवर्तन को कम करने की महत्वपूर्ण क्षमता होती है। पौधे एवं वनस्पतियां प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से कार्बन डाई–ऑक्साइड में कमी लाते हैं, साथ ही मृदा भी पौधों और जीवों से निकलने वाले जैविक कार्बन को संचित करती हैं। जलवायु संबंधित प्रभावों को कम करने के अतिरिक्त वनों के अन्य लाभ भी हैं जो मानव एवं प्रकृति दोनों के दृष्टिकोण से ध्यान देने योग्य हैं। वायुमण्डल से कार्बन को कम करने का सबसे सुरक्षित तरीका है कि कार्बन को पौधों, वनस्पतियों और मृदा में समा लिया जाए। प्राकृतिक वनों में जल की गुणवत्ता को सुधारने, आर्द्रभूमि में जल संग्रहण को बढ़ाने, भूमि अपरदन को रोकने, जैव–विविधता को सुरक्षित करने तथा रोजगार के नए अवसरों का सृजन करने की अधिक क्षमता विद्यमान है, यदि भूमि को प्राकृतिक रूप से वनों में परिवर्तित किया जाए तो यह वृक्षारोपण के मुकाबले 42 गुना तथा कृषि वानिकी के मुकाबले 6 गुना अधिक कार्बन को कम कर सकते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर यह संगोष्ठी हाइब्रिड माध्यम से आयोजित की जा रही है जिसमें निम्नलिखित विषयवस्तु पर विमर्श होगा:

- *जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा और स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियाँ।*
- *जलवायु परिवर्तन एवं भूमि स्थितियाँ/उपयोग।*
- *कृषि और वानिकी क्षेत्र से कार्बन उत्सर्जन एवं इसका नियंत्रण।*
- *वृक्ष प्रजातियों एवं वन क्षेत्रों की कार्बन स्थिरीकरण क्षमता।*
- *जलवायु परिवर्तन का वानिकी/पादपों पर प्रभाव।*

लगभग 250–300 शब्दों में सार(Abstract) anitatomar@icfre.org अथवा anubhasri_csfer@icfre.org पर ईमेल के माध्यम से भेजा जा सकता है। चयनित प्रस्तुतकर्ताओं को सूचित किया जाएगा और ऑनलाइन कार्यक्रम के लिए लिंक भी सूचित किया जाएगा।

समन्वयक
डॉ अनीता तोमर
वैज्ञानिक एफ

आयोजन सचिव
डॉ अनुभा श्रीवास्तव
वैज्ञानिक डी

हिन्दी पखवाड़ा
14–28 सितम्बर 2022

सार प्रस्तुतीकरण की अंतिम तिथि : 20 सितम्बर 2022

सार स्वीकृति की सूचना तिथि : 23 सितम्बर 2022